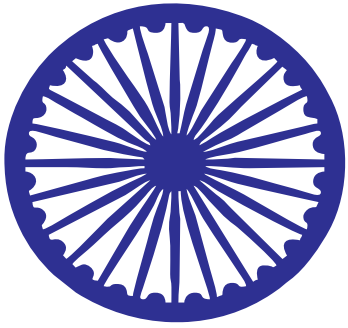




नवसर्जन संस्कृति

वर्ष : 01

अंक : 237

दि. 31.05.2026,

रविवार

पाना : 04

किंमत : 00.50 पैसा

सत्ता परिवर्तन पर कांग्रेस की मुहर, 3 जून को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे डीके शिवकुमार

बेंगलुरु। कर्नाटक की राजनीति में लंबे समय से चल रही अटकलों पर आखिरकार विराम लग गया है। सत्ता परिवर्तन के बहुप्रतीक्षित निर्णय को कांग्रेस विधायक दल की औपचारिक मंजूरी मिलने के बाद अब प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और वर्तमान उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार राज्य के अगले मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं। शनिवार को आयोजित कांग्रेस विधायक दल (सीएलपी) की महत्वपूर्ण बैठक में सर्वसम्मति से उन्हें विधायक दल का नेता चुना गया। इसके साथ ही कर्नाटक के 24वें मुख्यमंत्री के रूप में उनकी ताजपोशी का रास्ता पूरी तरह साफ हो गया। पार्टी सूत्रों के अनुसार 3 जून की शाम को बेंगलुरु में आयोजित एक सादगीपूर्ण समारोह में डीके शिवकुमार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेंगे। उनके साथ मंत्रिपरिषद के कई सदस्य भी शपथ ग्रहण करेंगे और राज्य को चार नए उपमुख्यमंत्री भी मिल सकते हैं।

कर्नाटक में कांग्रेस सरकार के गठन के समय से ही सत्ता के साझा फांसे को लेकर राजनीतिक चर्चाएं होती रही थीं। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डीके शिवकुमार को राज्य में कांग्रेस की जीत का प्रमुख चेहरा माना जाता रहा है। ऐसे में सत्ता परिवर्तन को लेकर समय-



सौहार्दपूर्ण तरीके से हुआ है, जो कांग्रेस की संगठनात्मक मजबूती को दर्शाता है। वेणुगोपाल ने बताया कि विधायक दल की बैठक में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के योगदान की भी सर्वसम्मति से सराहना की गई।

में प्रस्ताव स्वयं डीके शिवकुमार ने रखा। उन्होंने मुख्यमंत्री के रूप में सिद्धारमैया की उपलब्धियों और उनके प्रशासनिक अनुभव की खुलकर प्रशंसा की तथा कहा कि उनके मार्गदर्शन में पार्टी और सरकार आगे भी काम करती रहेगी। कांग्रेस विधायक दल द्वारा पारित प्रस्ताव में कहा गया कि वर्ष 2013 से 2018 और फ़िर 2023 से 2026 तक मुख्यमंत्री के रूप में सिद्धारमैया ने सामाजिक न्याय, कल्याणकारी योजनाओं और प्रशासनिक सुधारों के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। विधायक दल ने उनके प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि कांग्रेस कार्यकर्ता और राज्य की जनता उनके योगदान को हमेशा सम्मान के साथ याद रखेंगी। प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि विपक्ष के नेता के रूप में भी उन्होंने पार्टी को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, कांग्रेस की विचारधारा के प्रति समर्पण और संगठन के प्रति निष्ठा प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि डीके शिवकुमार के मुख्यमंत्री बनने के साथ ही कांग्रेस राज्य में नए राजनीतिक संतुलन की ओर बढ़ेगी। संगठन और सरकार दोनों

के कार्यकारी अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद जी. सी. चंद्रशेखर ने बताया कि पार्टी नहीं चाहती कि समारोह के कारण शहर के आम लोगों को किसी प्रकार की असुविधा हो। इसलिए बड़े पैमाने पर भीड़ जुटाने की योजना को सीमित कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि शिवकुमार के समर्थकों की ओर से राज्य के विभिन्न हिस्सों से लगभग एक हजार वसों में कार्यकर्ताओं को बेंगलुरु लाने की योजना बनाई गई थी। लेकिन चूंकि 3 जून कार्यक्रम है और राजधानी में पहले से ही यातायात का दबाव रहता है, इसलिए पार्टी ने बड़े स्तर पर भीड़ एकत्र करने से परहेज करने का फैसला किया है। कांग्रेस नेतृत्व का मानना है कि यह समारोह शक्ति का प्रतीक होना चाहिए। कांग्रेस नेताओं ने राज्यभर के कार्यकर्ताओं और समर्थकों से अपील की है कि वे शपथ ग्रहण समारोह के लिए बड़ी संख्या में बेंगलुरु न आएँ। पार्टी ने कहा है कि मुख्यमंत्री बनने के बाद डीके शिवकुमार स्वयं राज्य के विभिन्न जिलों का दौरा करेंगे और वहां कार्यकर्ताओं तथा आम जनता से सीधे संवाद करेंगे। ऐसे में समर्थकों को राजधानी पहुंचकर अनावश्यक भीड़ बढ़ाने की जरूरत नहीं है। पार्टी का उद्देश्य एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करना है जिसमें राजनीतिक समारोहों को भी सादगी और जिम्मेदारी के साथ आयोजित किया जा सके।

कर्नाटक में यह नेतृत्व परिवर्तन केवल एक राजनीतिक बदलाव नहीं माना जा रहा, बल्कि कांग्रेस के भीतर नेतृत्व संतुलन और संगठनात्मक एकता का महत्वपूर्ण उदाहरण भी माना जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में राज्य की राजनीति में डीके शिवकुमार और सिद्धारमैया दोनों ही प्रभावशाली चेहरे रहे हैं। ऐसे में सत्ता हस्तांतरण की यह प्रक्रिया बिना किसी बड़े विवाद के पूरी होना कांग्रेस के लिए सकारात्मक संकेत मानी जा रही है। अब सबकी निगाहें 3 जून पर टिकी हैं, जब डीके शिवकुमार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर राज्य की बागडोर संभालेंगे। उनके सामने एक ओर कांग्रेस सरकार की उपलब्धियों को आगे बढ़ाने की चुनौती होगी तो दूसरी ओर आगामी चुनावों को ध्यान में रखते हुए जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की जिम्मेदारी भी होगी। फिलहाल कांग्रेस नेतृत्व इस बदलाव को संगठनात्मक परिपक्वता और लोकतांत्रिक परंपरा की जीत के रूप में प्रस्तुत कर रहा है, जबकि राज्य की राजनीति एक नए अध्याय की शुरुआत का इंतजार कर रही है।

सोनारपुर में अभिषेक बनर्जी का विरोध, धक्का मुक्की और हंगामे से गरमाई बंगाल की राजनीति

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में चुनाव बाद की राजनीतिक तनातनी एक बार फिर खुरकर सामने आ गई, जब तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और सांसद Abhishek Banerjee के साथ दक्षिण 24 परगना जिले के सोनारपुर इलाके में कथित तौर पर धक्का-मुक्की, नारेबाजी और बदसलूकी की घटना सामने आई। चुनाव बाद हिंसा से प्रभावित परिवारों से मुलाकात करने पहुंचे अभिषेक बनर्जी को स्थानीय लोगों के तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा। स्थिति इतनी तनावपूर्ण हो गई कि उनकी सुरक्षा को देखते हुए उन्हें हेलमेट पहनाकर वहां से निकालना पड़ा। घटना के बाद राज्य की राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है और सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस तथा भारतीय जनता पार्टी आमने-सामने आ गई हैं।



के नारे लगाए, अंडे फेंके और कथित तौर पर उनकी शर्ट भी फाड़ दी। कुछ समय के लिए स्थिति पूरी तरह नियंत्रण से बाहर होती दिखाई दी, जिसके बाद सुरक्षा कर्मियों ने उन्हें घेरकर सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने की कोशिश की। घटना के दौरान अभिषेक बनर्जी ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए आरोप लगाया कि यह सब एक सुनियोजित राजनीतिक साजिश का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि उन्हें डराने और हमला करने की कोशिश की गई, लेकिन वे पीछे हटने वाले नहीं हैं। उन्होंने भावुक अंजद में कहा कि यदि कोई उनकी जान लेना चाहता है तो ले ले, लेकिन वे पीड़ित परिवारों को असुरक्षित स्थिति में छोड़कर नहीं जाएंगे। उन्होंने कहा

कि जब तक प्रभावित परिवारों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हो जाती और सुरक्षा बल वहां नहीं पहुंच जाते, तब तक वे क्षेत्र छोड़ने को तैयार नहीं हैं। तृणमूल कांग्रेस नेता ने यह भी आरोप लगाया कि घटना के समय पुलिस की मौजूदगी न के बराबर थी। उनके अनुसार इतनी लिए स्थिति पूरी तरह नियंत्रण से बाहर होती दिखाई दी, जिसके बाद सुरक्षा कर्मियों ने उन्हें घेरकर सुरक्षित स्थान तक पहुंचाने की कोशिश की। घटना के दौरान अभिषेक बनर्जी ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए आरोप लगाया कि यह सब एक सुनियोजित राजनीतिक साजिश का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि उन्हें डराने और हमला करने की कोशिश की गई, लेकिन वे पीछे हटने वाले नहीं हैं। उन्होंने भावुक अंजद में कहा कि यदि कोई उनकी जान लेना चाहता है तो ले ले, लेकिन वे पीड़ित परिवारों को असुरक्षित स्थिति में छोड़कर नहीं जाएंगे। उन्होंने कहा

कहा कि किसी भी राजनीतिक नेता पर इस प्रकार का हमला लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि देश में नफरत और राजनीतिक हिंसा का माहौल लगातार बढ़ रहा है और ऐसी घटनाएं उसी का परिणाम हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इतने संवेदनशील समय में सुरक्षा व्यवस्था की विफलता कई सवाल खड़े करती है और इसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी ने इस पूरे मामले में किसी भी प्रकार की भूमिका से इनकार किया है। पश्चिम बंगाल भाजपा अध्यक्ष Samik Bhattacharya ने कहा कि पार्टी का इस घटना से कोई संबंध नहीं है और भाजपा किसी भी नेता के साथ दुर्व्यवहार या हिंसा का समर्थन नहीं करती। उन्होंने तृणमूल कांग्रेस पर पलटवार करते हुए कहा कि दक्षिण 24 परगना सहित राज्य के कई हिस्सों में वर्षों से राजनीतिक हिंसा और विरोधियों के उत्पीड़न के आरोप लगते रहे हैं। यदि भाजपा भी उसी रास्ते पर चलना चाहती, तो तृणमूल नेताओं का सार्वजनिक रूप से निकलना मुश्किल हो जाता, लेकिन पार्टी ने हमेशा लोकतांत्रिक मर्यादाओं का पालन किया है।

पारसी महिलाओं के अधिकारों पर सुप्रीम कोर्ट की गंभीर टिप्पणी, धार्मिक पहचान और समानता के सवाल पर संविधान पीठ के फैसले का इंतजार

नई दिल्ली। देश में महिलाओं के धार्मिक अधिकारों, लैंगिक समानता और व्यक्तिगत पहचान से जुड़े एक महत्वपूर्ण मामले पर सुप्रीम कोर्ट ने गंभीर रुख अपनाया है। सर्वोच्च अदालत ने स्पष्ट किया है कि दूसरे धर्म के व्यक्ति से विवाह करने वाली पारसी महिलाओं के साथ कथित भेदभाव के मुद्दे पर अंतिम निर्णय देने से पहले वह नौ न्यायाधीशों की संविधान पीठ के फैसले का इंतजार करेगी। अदालत ने माना कि यह केवल किसी एक व्यक्ति के धार्मिक अधिकारों का मामला नहीं है, बल्कि इससे महिलाओं की समानता, धार्मिक स्वतंत्रता और संवैधानिक अधिकारों से जुड़े व्यापक प्रश्न जुड़े हुए हैं, जिनका प्रभाव भविष्य में कई समुदायों और मामलों पर पड़ सकता है।

यह मामला नागपुर की रहने वाली दीना बुधराजा की याचिका से जुड़ा है, जिन्होंने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाते हुए आरोप लगाया कि एक हिंदू व्यक्ति से विवाह करने के बावजूद उन्होंने अपना पारसी धर्म नहीं छोड़ा, फिर भी उन्हें अपने ही समुदाय के धार्मिक स्थल में प्रवेश से वंचित कर दिया गया। दीना का कहना है कि विवाह के बाद भी उनकी धार्मिक आस्था, पहचान और पारसी परंपराओं के प्रति समर्पण में कोई परिवर्तन नहीं आया, लेकिन समुदाय के कुछ नियमों के आधार पर उनके साथ ऐसा व्यवहार किया गया मानो उन्होंने अपना धर्म छोड़ दिया हो।

सुप्रीम कोर्ट की पीठ, जिसमें भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति यूएनएल, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम. पंचोलौ शामिल थे, ने मामले की सुनवाई के दौरान कहा कि यह विषय केवल धार्मिक प्रबंधन या किसी समुदाय के आंतरिक नियमों तक सीमित नहीं है। इसमें संविधान द्वारा प्रदत्त समानता, गरिमा और धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकारों की भी



व्याख्या शामिल है। अदालत ने कहा कि चूंकि इस प्रकार के कई संवैधानिक प्रश्न पहले से ही बड़ी संविधान पीठ के समक्ष विचारार्थ हैं, इसलिए उचित होगा कि नौ न्यायाधीशों की पीठ के निर्णय के बाद इस मामले पर आगे विचार किया जाए। विवाद की शुरुआत तब हुई जब वर्ष 2024 में दीना बुधराजा अपनी दादी के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए नागपुर स्थित पारसी अगियारी पहुंचीं। पारसी समुदाय में अगियारी या अग्नि मंदिर अत्यंत पवित्र धार्मिक स्थल माना जाता है, जहां धार्मिक अनुष्ठान और प्रार्थनाएं आयोजित की जाती हैं। दीना का आरोप है कि उन्हें अपनी दादी के अंतिम संस्कार से जुड़े धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेने और अगियारी में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई। इस घटना ने उन्हें गहरा मानसिक आघात पहुंचाया, क्योंकि वे स्वयं को आज भी पारसी धर्म का अनुयायी मानती हैं और समुदाय की धार्मिक परंपराओं का पालन करती रही हैं।

याचिका में दीना ने विशेष रूप से नागपुर पारसी पंचायत के संविधान में मौजूद नियम 5(2) को चुनौती दी है। उनके अनुसार यह नियम महिलाओं के साथ स्पष्ट रूप से भेदभावपूर्ण व्यवहार करता है। नियम के तहत यदि कोई पारसी महिला किसी गैर-पारसी या दूसरे धर्म के व्यक्ति से विवाह करती है, तो उसे समुदाय की धार्मिक पहचान और कुछ धार्मिक अधिकारों से

वंचित माना जाता है। इसके परिणामस्वरूप उसे अगियारी में प्रवेश, धार्मिक कार्यक्रमों में भागीदारी और कुछ अन्य सामुदायिक अधिकारों से भी रोका जा सकता है। दीना का तर्क है कि यही नियम पारसी पुरुषों पर समान रूप से लागू नहीं किया जाता। यदि कोई पारसी पुरुष किसी दूसरे धर्म की महिला से विवाह करता है, तो उसकी धार्मिक पहचान और समुदाय में उसकी स्थिति सामान्य रूप से बनी रहती है। याचिका में कहा गया है कि यह दोहरा मापदंड संविधान के अनुच्छेद 14 के तहत प्रदत्त समानता के अधिकार का उल्लंघन करता है। साथ ही यह महिलाओं के साथ केवल उनके लिंग के आधार पर भेदभाव करने जैसा है, जो आधुनिक संवैधानिक मूल्यों और न्याय के सिद्धांतों के विपरीत है। इस मामले ने केवल पारसी समुदाय ही नहीं, बल्कि पूरे देश में धार्मिक परंपराओं और संवैधानिक अधिकारों के बीच संतुलन को लेकर नई बहस खेड़ दी है। एक पक्ष का मानना है कि प्रत्येक धार्मिक समुदाय को अपने धार्मिक स्थलों और परंपराओं के संचालन का अधिकार है, जबकि दूसरा पक्ष तर्क देता है कि कोई भी परंपरा या नियम महिलाओं के साथ असमान व्यवहार करता है, तो उसकी संवैधानिक समीक्षा आवश्यक है।

कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि यह मामला उन महत्वपूर्ण प्रश्नों को सामने लाता है जो भारत जैसे बहुलतावादी समाज में अक्सर उत्पन्न होते हैं। संविधान एक ओर धार्मिक स्वतंत्रता और समुदायों को अपने धार्मिक मामलों का प्रबंधन करने का अधिकार देता है, वहीं दूसरी ओर समानता, गरिमा और गैर-भेदभाव जैसे

सिंगापुर। बदलते वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य और तेजी से उभरती भू-राजनीतिक चुनौतियों के बीच भारत ने अपने प्रमुख अंतरराष्ट्रीय साझेदारों के साथ रक्षा और सामरिक सहयोग को और मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की है। सिंगापुर में आयोजित प्रतिष्ठित Shangri-La Dialogue के अवसर पर भारत के रक्षा सचिव Rajesh Kumar Singh ने ऑस्ट्रेलिया, यूरोपीय संघ और नीदरलैंड के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ अलग-अलग उच्चस्तरीय बैठकें कर रक्षा सहयोग, सामरिक साझेदारी और क्षेत्रीय सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की। इन बैठकों को भारत की सक्रिय रक्षा कूटनीति और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ती रणनीतिक भूमिका के महत्वपूर्ण संकेत के रूप में देखा जा रहा है। वैश्विक स्तर पर शक्ति संतुलन में तेजी से हो रहे बदलावों के बीच भारत लगातार ऐसे देशों और संगठनों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान दे रहा है, जिनके साथ उसके सामरिक, आर्थिक और सुरक्षा हित जुड़े हुए हैं। सिंगापुर में हुई ये बैठकें इसी व्यापक रणनीति का हिस्सा मानी जा रही हैं। भारत की कोशिश केवल सैन्य सहयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि रक्षा प्रौद्योगिकी, रक्षा उत्पादन,

दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री व्यापार मार्ग मौजूद है। अनुमान है कि वैश्विक समुद्री व्यापार का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा इसी क्षेत्र से होकर गुजरता है। ऐसे में इस क्षेत्र की सुरक्षा और स्थिरता केवल क्षेत्रीय नहीं बल्कि वैश्विक महत्व का विषय बन गई है। भारत के लिए हिंद-प्रशांत केवल एक भौगोलिक अवधारणा नहीं, बल्कि उसकी राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक हितों का अभिन्न हिस्सा है। भारत के रणनीतिक हित मलक्का जलडमरूमध्य से लेकर अरब सागर और फारस की खाड़ी तक फैले हुए हैं। ऊर्जा आपूर्ति, व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा और समुद्री संचार की स्वतंत्रता भारत की सुरक्षा नीति के महत्वपूर्ण तत्व हैं। यही वजह है कि भारत इस क्षेत्र में समान विचारधारा वाले देशों के साथ सहयोग बढ़ाने को प्राथमिकता दे रहा है। ऑस्ट्रेलिया के अलावा रक्षा सचिव Belen Martinez Carbonell तथा Enrico Barduani से मुलाकात कर रक्षा और सुरक्षा सहयोग के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। इन बैठकों में यूरोप और हिंद-प्रशांत क्षेत्र के बीच उभरते रणनीतिक संबंधों, समुद्री सुरक्षा,

रक्षा उद्योग सहयोग तथा वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों पर विचार-विमर्श किया गया। भारत और यूरोपीय संघ के संबंध पिछले कुछ वर्षों में लगातार मजबूत हुए हैं। व्यापार, प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन और डिजिटल सहयोग के साथ-साथ अब रक्षा और सुरक्षा क्षेत्र भी दोनों पक्षों के संबंधों का महत्वपूर्ण आयाम बनता जा रहा है। वैश्विक स्तर पर बढ़ती अस्थिरता और सुरक्षा चुनौतियों के मद्देनजर भारत और यूरोपीय संघ दोनों ही रणनीतिक साझेदारी को अधिक व्यापक और प्रभावी बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह ने नीदरलैंड की रक्षा मंत्री Dilan Yesilgoz-Zegerius के साथ भी अलग से बातचीत की। भारत और नीदरलैंड के बीच रक्षा क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं, सैन्य संपर्कों और रक्षा उद्योग से जुड़े अवसरों पर चर्चा हुई। दोनों देशों ने रक्षा उत्पादन, तकनीकी सहयोग और नवचार आधारित साझेदारी को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। भारत के रक्षा मंत्रालय के अनुसार इन सभी बैठकों का प्रमुख उद्देश्य द्विपक्षीय रक्षा सहयोग को मजबूत करना, सैन्य संबंधों का विस्तार करना और रक्षा औद्योगिक सहयोग के नए अवसरों की तलाश करना था।

नवसर्जन संस्कृति

हिन्दी

Jio Air Fiber

Jio Tv +

Jio Fiber

Daily Hunt

ebaba Tv

Dish Plus

DTH live OTT

Rock TV

Airtel

Amezone Fire

Roku Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही नवसर्जन संस्कृति हिंदी चैनल देखिये



संपादकीय

लोकहित की प्रतिबद्धता

पत्रकारिता का फर्ज

भले ही हिंदी पत्रकारिता गफलत में अपनी पहली शताब्दी न मना सकी हो, लेकिन वह द्दिशताब्दी के मौके पर खासी उत्साहित है। वह आत्ममंथन के दौर से गुजर रही है। आज से दो सौ साल पहले उत्तर भारत से जाकर तत्कालीन कलकत्ता को कर्मभूमि बनाने वाले पं. युगल किशोर शुक्ल ने ‘उदन्त मार्तण्ड’ के रूप में हिंदी पत्रकारिता का बीजारोपण किया था। भले ही वह पत्र आर्थिक झंझावातों से अधिक समय तक न चल सका, लेकिन अपनी ‘आदि प्रतिज्ञा’ से वह जो पत्रकारिता का लक्ष्य तय कर गया, वह आज भी उतना ही जरूरी व प्रासंगिक है। ‘उदन्त मार्तण्ड’ के प्रवेशांक में पं. शुक्ल ने लिखा था कि इस समाचार पत्र का प्रकाशन- ‘ हिंदुस्तानियों के हित के हेत’ ... किया जा रहा है। निस्संदेह, ध्येय वाक्य के गहरे निहितार्थ थे और आज भी हैं। सही मायने में पत्र ने दो सदी पहले पत्रकारों को उनका ‘कर्मपथ’ बता दिया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि जबकि यह हिंदी भाषा का समाचार पत्र था, लेकिन उसकी फिक्र केवल हिंदी भाषियों की ही नहीं थी। उसकी ‘आदि प्रतिज्ञा’ समस्त हिंदुस्तानी समाज के हित को लेकर थी। पत्र का नाम ‘उदन्त मार्तण्ड’ यानी उगता सूरज था। बाकायदा समाचार पत्र के नाम के साथ संस्कृत में लिखा होता था कि जैसे सूरज के प्रकाश के बिना अंधेरा दूर नहीं होता, उसी तरह अज्ञ जन समाचार पत्र के बिना ज्ञानवान नहीं बन सकते। यह भी कि ज्ञान के प्रकाश को फैलाने के मकसद से इस समाचार पत्र का प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चय ही उदन्त मार्तंड की ‘आदि प्रतिज्ञा और धेय’ में सभी भाषाओं की पत्रकारिता का लक्ष्य आज भी यही है। निश्चय ही यह पत्रकारिता विरादरी को आईना दिखाता है कि हमारी पत्रकारिता हर हिंदुस्तानी के हित के हेत है? क्या हम हम समाज में अज्ञ को ज्ञानवान बनाने का काम कर रहे हैं? क्या हमारे शब्द उतने ही अर्थवान व सारवान हैं, जिसना इस पेशे से अपेक्षित है। निश्चय ही यह अवसर पत्रकारिता विरादरी को आत्ममंथन का मौका देता है। हिंदी पत्रकारिता के प्रतीक पुरुष स्व. प्रभाष जोशी ने एक बार पत्रकारिता के छात्रों से बातचीत करते हुए कहा था कि पत्रकारिता ‘ऋषिकर्म’ है। जिसमें घर फूंक तमाशा देखने का लज्जा हो, वही पत्रकारिता में आए। पैसे कमाने के लिये तमाम पेशे हैं। साथ ही यह भी कि किसी डेड पेज की प्रेस विज्ञप्ति में यदि कोई डेड लाइन की खबर निकाल सके, तो वही असली पत्रकार है। बाकी सब विज्ञापन है। लेकिन लिडबना यह है कि आज विश्वविद्यालयों से निकलने वाले पत्रकारिता के छात्रों में बिरले ही ऐसे होते हैं, जो वेतन, पैकेज व पद के सम्मोहन से मुक्त होकर मिशनरी पत्रकारिता का जन्म रखते हों। आज पत्रकारिता के नवसाधरों की बड़ी पंजी पत्रकारिता के रलैमर व प्रसिद्धि के प्रलोभन में इस पेशे में आती है। उसे आजादी की लड़ाई में सर्वस्व अर्पित करने वाले ‘स्वराज’ अखबार का शायद ही भान हो, जिसके डाईज वर्ष के अल्पकाल में संपादकों को डेड सौ साल की सजाएं हुईं। लेकिन उसके बावजूद संपादक पद के लिये विज्ञापन देने पर जच्चे के पत्रकारों की लाइन बढ़ जाती थी। निश्चित रूप से पत्रकारिता जीवन मृत्यों की शुचिता व सामाजिक दायित्वों का पेशा है। यह विशुद्ध कारोबार या व्यवसाय नहीं हो सकता है। विडंबना यह है कि तकनीकी क्रांति के बाद जब से बड़ी पूंजी की समाचारों के प्रकाशन में दखल बड़ी है, तब से संपादक नामक संस्था क्षीण हुई है और पूंजीपति की दखल में वृद्धि हुई है। पिछली सदी में एक दिग्गज संपादक की वर टिप्पणी आज भी प्रासंगिक है कि ‘भविष्य के अखबार रूप-रंग व प्रकाशन में तो आकर्षक होंगे, लेकिन उनमें पत्रकारिता की आत्मा न होगी।’ निश्चय ही आज बाजार और राजनीति की दखल के चलते पत्रकारिता के समक्ष बड़ी चुनौती बनी है। वही नई पीढ़ी के कथित ऑनलाइन से डिजिटल सम्मोहन के चलते प्रिंट पत्रकारिता से छिटकना भी चिंता की बात है। कान्वेंट स्कूलों से निकलने वाले छात्र हिंदी भाषायी समाचार पत्रों से विमुख हुए हैं। उनका समाचार पत्रों से विमुख होना भारतीय परिवेश, संस्कृति व मातृभाषा से दूर होना भी है। ये संपादकों को सोचना होगा कि समाचार पत्रों से नई पीढ़ी का लगाव कैसे गहरा किया जाए।

अभियान

नैमिषारण्य: वह दिव्य तपोभूमि जहां आज भी कलियुग की छाया नहीं पहुंच सकी

भारत की सनातन संस्कृति में अनेक ऐसे तीर्थ स्थल हैं जिनका महत्व केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि वे आध्यात्मिक ऊर्जा, धार्मिको इतिहास और ऋषि-मुनियों की तपस्य के जीवंत प्रतीक भी हैं। इन पवित्र स्थलों में उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में स्थित नैमिषारण्य का नाम अत्यंत प्रसिद्ध और सम्मान के साथ लिया जाता है। गोमती नदी के पवन तट पर बसा यह तीर्थ क्षेत्र हजारों वर्षों से साधु-संतों, ऋषियों, तपस्वियों और श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र रहा है। हिंदू धर्मियों में इसे पृथ्वी का सबसे प्राचीन और पवित्र तीर्थ माना गया है। मान्यता है कि यह वह दिव्य स्थान है जहां आज भी कलियुग का प्रभाव प्रवेश नहीं कर पाया है। यही कारण है कि नैमिषारण्य को केवल एक तीर्थ नहीं, बल्कि आध्यात्मिक शरणस्थली और देवताओं की तपोभूमि के रूप में देखा जाता है। सनातन धर्म में समय को चार युगों में विभाजित किया गया है—सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग। इनमें कलियुग को अंतिम युग माना गया है। पुरणों और धर्मग्रंथों के अनुसार इस युग में धर्म का ह्रास, अधर्म की वृद्धि, लोभ, मोह, क्रोध, ईर्ष्या, असत्य और अज्ञानता का विस्तार होता है। मनुष्य का मन भौतिक सुखों की ओर अधिक आकर्षित होता है और आध्यात्मिक चेतना कमजोर पड़ने लगती है। ऐसे समय में यदि कोई स्थान कलियुग के

पंजाब त्रिस्तरीय निकाय चुनाव के दलगत, क्षेत्रीय राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सियासी मायने अहम

“

भाजपा के विस्तार की प्रयोगशाला: भारतीय जनता पार्टी पंजाब में शहरी हिंदू वोट और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों के सहारे धीरे-धीरे विस्तार करना चाहती है। इसमें वह सफल रही। भाजपा नगर निकायों में सीटें ज्यादा नहीं बढ़ा पाई है, लिहाजा वह 2027 में गठबंधन राजनीति के बिना भी अधिक आक्रामक रणनीति अपना सकती है।

प्रेरणा

जब साधारण जिम्मेदारियां असाधारण परिणाम बन जाती हैं

मानव जीवन में सफलता को लेकर अनेक धारणाएं प्रचलित हैं। अधिकांश लोग मानते हैं कि महान बनने के लिए किसी विशेष अवसर, असाधारण प्रतिभा या भाग्य के अद्भुत साथ की आवश्यकता होती है। लेकिन इतिहास और जीवन के अनुभव बार-बार यह सिद्ध करते हैं कि सफलता का वास्तविक आधार कुछ और ही होता है। महानता की शुरुआत उन छोटे-छोटे कार्यों से होती है जिन्हें अधिकांश लोग महत्वहीन समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। जो व्यक्ति साधारण जिम्मेदारियों को भी पूरी निष्ठा, समझदारी और समर्पण के साथ निभाता है, वही समय आने पर असाधारण उपलब्धियों का अधिकारी बनता है। जापान के इतिहास में एक ऐसा ही प्रेरणादायक प्रसंग मिलता है। सोलहवीं शताब्दी में एक युवा सेवक था, जिसका नाम हिदेयोशी था। उसका जीवन किसी साधारण कर्मचारी की तरह था। वह अपने स्वामी के जुते व्यवस्थित खाता, अस्तबल की सफाई करता और सैनिकों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता था। उसके पास न कोई विशेष अधिकार था और न ही समाज में कोई ऊंचा स्थान। वह उन हजारों लोगों में से एक था जो पदों के पीछे रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं। लेकिन उसके व्यक्तित्व में एक ऐसी विशेषता थी जिसने अंततः उसे इतिहास के महान व्यक्तियों की श्रेणी में पहुंचा दिया। एक अत्यंत ठंडी सुबह उसके स्वामी को युद्ध परिषद की महत्वपूर्ण बैठक में जाना था। जब उन्होंने अपने जुते पहने तो उन्हें आश्चर्य हुआ कि जुते भीतर से गर्म थे। उन्होंने कारण पूछा तो हिदेयोशी ने विनम्रता

से उत्तर दिया कि रात अत्यधिक ठंडी थी और उसे लगा कि ठंडे जुते पहनने से स्वामी को असुविधा होगी। इसलिए उसने उन्हें अपने वस्त्रों के भीतर रखकर गर्म कर लिया था। यहां उपस्थित कई लोग इस बात पर हंस पड़े। उन्हें यह एक तुच्छ और अनवश्यक प्रयास लगा। लेकिन उसके स्वामी ने उस घटना में कुछ अलग देखा। उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति को पहचाना जो केवल आदेशों का पालन नहीं करता था, बल्कि दूसरों की आवश्यकताओं को पहले से समझने की क्षमता भी रखता था। यही वह गुण है जो किसी व्यक्ति को सामान्य भीड़ से अलग करता है। अधिकांश लोग केवल उतना ही करते हैं जितना उनसे कहा जाता है। वे अपने कार्य को एक कर्तव्य मानकर पूरा कर देते हैं और उससे आगे सोचने का प्रयास नहीं करते। लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो कार्य के पीछे छिपी आवश्यकता और उद्देश्य को समझते हैं। वे केवल समस्या का समाधान नहीं करते, बल्कि समस्या उत्पन्न ही न हो इसके लिए पहले से तैयारी करते हैं। यही दूरदर्शिता और संवेदनशीलता नेतृत्व का आधार बनती है। हिदेयोशी के जीवन में भी यही हुआ। धीरे-धीरे उसे अधिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां मिलने लगीं। उसने हर कार्य को उसी सावधानी और गंभीरता से किया जैसी उसने जुतों को गर्म करने जैसे छोटे कार्य में दिखाई थी। युद्ध अभियानों के दौरान उसने सैनिकों की थकान, उनके भोजन, उनके विश्राम और उनके मानवत्व तक का ध्यान रखा। उसने समझ लिया था कि किसी भी सेना की वास्तविक शक्ति केवल उसके हथियारों में नहीं, बल्कि उन लोगों में होती है



ने लगभग 14% सीटों पर जीत व बड़त हासिल की है। जहाँ तक वोट प्रतिशत का सवाल है, तो विभिन्न मीडिया रिपोर्टों और संकलित रङ्गानों के अनुसार दल और अनुमानित वोट प्रतिशत इसप्रकार हैं- आम आदमी पार्टी को लगभग 41–44%, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को लगभग 24–27%, भारतीय जनता पार्टी को लगभग 13–16%, शिरोमणि अकाली दल को लगभग 10–13% और निर्दलीय व अन्य लगभग 5–8% वोट हासिल हुए हैं। इस प्रकार आप का वोट शेयर सबसे अधिक रहा, जबकि कांग्रेस दूसरे नंबर पर, शिरोमणि अकाली दल तीसरे नम्बर पर रही और इसने ग्रामीण-सिख वेल्ट में कुछ आधार वापस पाया, जबकि बीजेपी चौथे स्थान पर जाकर कुछ शहरी पॉकेट्स तक सीमित रही। आधिकारिक वोट प्रतिशत का सबसे विश्वसनीय डेटा sec.punjab.gov.in पर उपलब्ध है।

अब जिस तरह से इन चुनावों के नतीजे आए हैं, उसने यह तय कर दिया है कि राज्य की राजनीति में आम आदमी पार्टी की जमीन मजबूत हो रही है और

कांग्रेस, भाजपा, एएसडी जैसे विपक्षी दल बचाव की मुद्रा में आ चुके हैं। लिहाजा पंजाब त्रिस्तरीय शहरी निकाय चुनाव के दलगत, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सियासी मायने अहम हैं। पहला, आप (AAP) अपने जनविश्वास की परीक्षा में सफल: मुख्यमंत्री भागवंत मान और आम आदमी पार्टी के लिए यह चुनाव सत्ता में आने के बाद शहरी जनसमर्थन मापने का अवसर था, जो बड़ी जीत के साथ उम्मीदों पर खरा उतरा। निकायों में मजबूत जीत मिली है। इससे यह संदेश गया कि पंजाब में आप सिर्फ “वैकल्पिक प्रयोग” नहीं, बल्कि स्थायी राजनीतिक शक्ति बन चुकी है। आप की बड़ी जीत इसी और संकेत करती है। आप (AAP) के लिए ये चुनाव सबसे अहम थे क्योंकि वह राज्य की सत्ता में हैं। नगर निकायों में मजबूत प्रदर्शन से यह संदेश गया कि जनता अभी भी मुख्यमंत्री भागवंत मान की सरकार पर भरोसा कर रही है। इसमें आम क्षेत्रीय अस्मिता की पाटी के रूप में फिर स्थापित करना चाहती है। शिरोमणि अकाली दल के लिए

“पंजाब मॉडल” को भी प्रचारित करने का अवसर मिला। साथ ही विपक्ष के बिखराव का भी लाभ मिला। वहाँ, आप के लिए खतरों की बात यह है कि नशा, कानून-व्यवस्था और प्रशासनिक दखल के आरोप बड़ी चुनौती बने हुए हैं। दूसरा, कांग्रेस के अस्तित्व की लड़ाई पर विपक्षी हैसियत बनाई: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लिए पंजाब आखिरी बड़े राज्यों में से एक है जहाँ वह अब भी राजनीतिक पुनर्जीवन की उम्मीद देखती है। वह मिली भी और पार्टी मुख्य विपक्षी पार्टी की हैसियत पा गई। भले ही कांग्रेस ने निकाय चुनावों में कमजोर प्रदर्शन किया, लेकिन इतनी सीट मिल गई कि उसका संगठनात्मक संकेत ज्यादा नहीं बहेगा। पंजाब कभी कांग्रेस का मजबूत गढ़ था, लेकिन लगातार संगठनात्मक कमजोरी और गुटबाजी ने उसे कमजोर किया है। फिर भी कांग्रेस के लिए अवसर यह है कि कई शहरों में दूसरे स्थान पर भी उसने आदमी पार्टी के लिए यह चुनाव सत्ता में आने के बाद शहरी जनसमर्थन मापने का अवसर था, जो बड़ी जीत के साथ उम्मीदों पर खरा उतरा। निकायों में मजबूत जीत मिली है। इससे यह संदेश गया कि पंजाब में आप सिर्फ “वैकल्पिक प्रयोग” नहीं, बल्कि स्थायी राजनीतिक शक्ति बन चुकी है। आप की बड़ी जीत इसी और संकेत करती है। आप (AAP) के लिए ये चुनाव सबसे अहम थे क्योंकि वह राज्य की सत्ता में हैं। नगर निकायों में मजबूत प्रदर्शन से यह संदेश गया कि जनता अभी भी मुख्यमंत्री भागवंत मान की सरकार पर भरोसा कर रही है। इसमें आम क्षेत्रीय अस्मिता की पाटी के रूप में फिर स्थापित करना चाहती है। शिरोमणि अकाली दल के लिए

सकारात्मक संकेत यह है कि ग्रामीण-सिख वोट बैंक में आंशिक वापसी हुई, जो भाजपा से अलग होकर स्वतंत्र पहचान मजबूत करने की कोशिश हो सकती है, जबकि उसकी चुनौती यह है कि शहरी क्षेत्रों में कमजोर संगठन के चलते युवा मतदाताओं के बीच सीमित आकर्षण है। चौथा, भाजपा के विस्तार की प्रयोगशाला: भारतीय जनता पार्टी पंजाब में शहरी हिंदू वोट और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों के सहारे धीरे-धीरे विस्तार करना चाहती है। इसमें वह सफल रही। भाजपा नगर निकायों में सीटें ज्यादा नहीं बढ़ा पाई है, लिहाजा वह 2027 में गठबंधन राजनीति के बिना भी अधिक आक्रामक रणनीति अपना सकती है। भाजपा के लिए पंजाब अभी भी विस्तार का राज्य है। पार्टी हिंदू-शहरी वोट और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों के सहारे जगह बनाने की कोशिश कर रही है। हालांकि यहां भाजपा के लिए अवसर यह है कि कांग्रेस और शिरोमणि अकाली दल की कमजोरी का लाभ मिलेगा और शहरी निकायों में सीटें बढ़ाकर दीर्घकालिक आधार तैयार करने में सहाूलियत होगी। हालांकि सबसे बड़ी बाधा किसान आंदोलन के बाद ग्रामीण पंजाब में अविश्वास। के चलते राज्य में अभी भी सीमित संगठनात्मक नेटवर्क है। पांचवां, पंजाब में बहुजन समाज पार्टी (BSP) अकेले चुनाव लड़कर दलित वोट बैंक को पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रही है, जो इस बार भी नहीं मिली। क्योंकि वहां बड़ी दलित आबादी होने के कारण बीएसपी भविष्य की राजनीति में “किंगमेकर” की भूमिका देख रही है। लिहाजा इन चुनावों से उपरते बड़े संकेत इस बात की तस्दीक करते हैं कि पंजाब की राजनीति अब पूरी तरह बहुक्रोणीय हो चुकी है। शहरी मतदाता विकास के साथ-साथ नशे और प्रशासनिक जवाबदेही को भी अहम मुद्दा मान रहा है।

हिन्दी पत्रकारिता की दशा और दिशा

भारत में प्रेस ने लगभग प्रत्येक महत्वपूर्ण अवसर पर अपनी महता सिद्ध की है, फिर चाहे भारत-पाक युद्ध हो या भारत-चीन लड़ाई अथवा अन्य कोई चुनौतीपूर्ण अवसर। यह कहना भी असंगत नहीं होगा कि हिन्दी पत्रकारिता का स्थान इसमें सटीकौर रहा है। हिन्दी भाषी समाचारपत्र जो अथवा पत्रिकाएँ, उनका देश की बहुसंख्यक आबादी के साथ सदैव विशेष जुड़ाव रहा है और इस दृष्टि से राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं विकास की दिशा में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका को कमपि नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। हालाँकि हिन्दी पत्रकारिता के 200 वर्षों के इतिहास में समय के साथ पत्रकारिता के मायने और उद्देश्य बदलते रहे हैं किन्तु उसके बावजूद सुखद स्थिति यह है कि हिन्दी पत्रकारिता के पाठकों या दर्शकों की रूचि में कोई कमी नहीं आई। यह अलग बात है कि अंग्रेजी मीडिया और उससे जुड़े कुछ पत्रकारों ने भले ही हिन्दी पत्रकारिता की उपेक्षा करते हुए सदैव उसकी प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता पर सवाल उठाये की कोशिशें की हैं किन्तु वास्तविकता यह है कि पिछले कुछ दशकों में हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी ताकत का बखूबी अहसास काया है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी उसकी विश्वसनीयता बढ़ी है। यह हिन्दी पत्रकारिता की बढ़ती ताकत का ही नतीजा है कि कुछ हिन्दी अखबारों ने अनेक संस्करणों के साथ प्रसार संख्या के मामले में कुछ अंग्रेजी अखबारों को भी पीछे छोड़ दिया है। हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत 30 मई 1826 को कानपु्र निवासी पं. यशुल किशोर शुक्ल द्वारा प्रथम हिन्दी समाचार पत्र ‘उदत्त मार्तण्ड’ के प्रकाशन के साथ हुई थी, जिसका अर्थ था ‘समाचार सूर्य’। उस समय अंग्रेजी, फ़ारसी और बांग्ला में कई समाचारपत्र च निकल रहे थे किन्तु हिन्दी का पहला समाचारपत्र ‘उदत्त मार्तण्ड’ 30 मई 1826 को कलकत्ता में पहली बार प्रकाशित हुआ था, जो साप्ताहिक के रूप में आरंभ किया गया था। पहली बार उसकी केवल 500 प्रतियाँ ही छापी गई थी लेकिन चूँकि कलकत्ता में हिन्दी भाषियों की संख्या काफी कम थी और इसके पाठक कलकत्ता से बहुत दूर के भी होते थे, इसलिए संसाधनों की कमी के कारण यह लंबे समय तक प्रकाशित नहीं हो पाया। 6 दिसम्बर 1826 से ‘उदत्त मार्तण्ड’ का प्रकाशन बंद कर दिया गया लेकिन इस समाचारपत्र के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी पत्रकारिता की ऐसी नींव रखी जा चुकी थी कि उसके बाद से हिन्दी पत्रकारिता ने अनेक आयाम स्थापित किए हैं।

‘उदत्त मार्तण्ड’ के बाद अंग्रेजी शासनकाल व अनेक हिन्दी समाचारपत्र व पत्रिकाएँ एक पिछाने की स्थिति में निकलते गए किन्तु ब्रिटिश शासनकाल की ज्वायतियों के चलते उन्हें लंबे समय तक चलाते रहना बड़ा मुश्किल था, फिर भी कुछ पत्र-पत्रिकाओं ने सार्वजनिक सभर तय किया। अब परिस्थितयां बिल्कुल बदल चुकी हैं और हिन्दी पत्रकारिता भी पिछान न रहकर एक बड़ा दिव्य व्यवसाय बन गई है किन्तु अच्छी बात यह है कि आज भी हिन्दी पाठक व दर्शक अपनी-अपनी पसंद के अखबारों व चैनलों के साथ पूरी शिद्दत से जुड़े हैं। बरहदाल, घर बैठे-बैठे दुनिया की सैर करने

मीडिया और त्वरित उपलब्धियों के दौर में धैर्य का महत्व कम होता जा रहा है। लोग चाहते हैं कि उन्हें बिना लंबी तैयारी के बड़ा अवसर मिल जाए। लेकिन वास्तविक जीवन में ऐसा बहुत कम होता है। प्रकृति का नियम है कि जो व्यक्ति छोटी परीक्षाओं में सफल होता है, वही बड़ी जिम्मेदारियों के योग्य बनता है। बीज को वृक्ष बनने में समय लगता है। नदी को समुद्र तक पहुँचने के लिए लंबी यात्रा करनी पड़ती है। उसी प्रकार किसी व्यक्ति को भी महानता तक पहुँचने के लिए छोटे-छोटे कदमों की लंबी यात्रा करनी पड़ती है। छोटे कार्यों का महत्व केवल सफलता तक सीमित नहीं है। वे व्यक्ति के चरित्र का भी निर्माण करते हैं। जब कोई व्यक्ति साधारण परिस्थितियों में भी ईमानदारी, सम्यपालन, संवेदनशीलता और परिश्रम का परिचय देता है, तब ये गुण धीरे-धीरे उसके स्वभाव का हिस्सा बन जाते हैं। बाद में जब वह बड़े पद या बड़ी जिम्मेदारी में पहुँचता है, तब वही गुण उसके नेतृत्व और निर्णयों में दिखाई देते हैं। इसलिए चरित्र निर्माण की प्रक्रिया भी छोटे कार्यों से ही प्रारंभ होती है।

महान व्यक्तियों के जीवन का अध्ययन करने पर एक बात स्पष्ट दिखाई देती है कि उन्होंने कभी किसी कार्य को छोड़ नहीं माना। उन्होंने हर जिम्मेदारी को सीखने और स्वयं को बेहतर बनाने का अवसर समझा। चाहे वह सेवा का कार्य हो, अध्ययन में हो या नेतृत्व का, उन्होंने हर क्षे्र में अपना सर्वश्रेष्ठ देना का प्रयास किया। यही आदत उन्हें दूसरों से अलग बनाती गई और अंततः उन्हें सफलता के उच्चतम शिखरों तक ले गई।

किया गया, जिसके द्वारा इन्द्र ने वज्रासुर का वध किया। त्याग और बलिदान की यह अद्भुत कथा नैमिषारण्य को और अधिक गौरव प्रदान करती है।

नैमिषारण्य में स्थित ललिता देवी मंदिर भी अत्यंत प्रसिद्ध है। इसे शक्तिपीठों में विशेष स्थान प्राप्त है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि यहाँ मां ललिता देवी की कृपा से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इसके अतिरिक्त हनुमान गढ़ी, व्यास गढ़ी, दधीचि कुंड, सीता कुंड और अनेक अलग अलग पवित्र स्थल भी यहां स्थित हैं। हर स्थान अपने भीतर किसी न किसी पौराणिक कथा और आध्यात्मिक महत्व को समेटे हुए है।

इस तीर्थ की एक विशेष पहचान 84 कोसी परिक्रमा भी है। यह परिक्रमा अत्यंत पवित्र मानी जाती है और फाल्गुन मास में बड़ी संख्या में श्रद्धालु इसमें भाग लेते हैं। माना जाता है कि इस परिक्रमा को श्रद्धा और नियमपूर्वक पूर्ण करने से व्यक्ति को विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। परिक्रमा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक जागरण का माध्यम भी मानी जाती है। धार्मिक मान्यता यह भी है कि यदि कोई साधक नैमिषारण्य में बारह वर्षों तक तपस्या करता है तो उसे ब्रह्मलोक की प्राप्ति हो सकती है। यह मान्यता इस स्थान की आध्यात्मिक शक्ति और महिमा को दर्शाती है। प्राचीन काल से ही

स्थित चक्रतीर्थ श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र है। इस तीर्थ में एक गोलाकार जलकुंड है, जिसके मध्य से निरंतर जल प्रवाहित होता रहता है। भक्तजन यहां स्नान कर अपने जीवन के पापों से मुक्ति की कामना करते हैं। माना जाता है कि चक्रतीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को आध्यात्मिक शुद्धि प्राप्त होती है और उसके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं।

नैमिषारण्य का एक और महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसका संबंध भगवान श्रीराम से भी जुड़ा हुआ है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान राम ने अपने राक्षसकाल में यहीं पर अश्वमेध यज्ञ संपन्न किया था। यह यज्ञ केवल शक्ति प्रदर्शन का माध्यम नहीं था, बल्कि लोककल्याण और धर्म स्थापना का प्रतीक भी माना जाता है। श्रीराम के इस यज्ञ के कारण नैमिषारण्य का महत्व और अधिक बढ़ गया। आज भी रामपक्ष दिवस स्थान को विशेष श्रद्धा से देखते हैं और यहां आकर श्री राम की आदर्शता का स्मरण करते हैं। इस पवित्र भूमि का संबंध महर्षि दधीचि से भी जुड़ा हुआ है। कथा के अनुसार जब असुरों का आतंक बढ़ गया और देवताओं के लिए उन्हें पराजित करना कठिन हो गया, तब देवराज इन्द्र ने महर्षि दधीचि से सहायता मांगी। लोककल्याण और धर्म रक्षा के लिए महर्षि दधीचि ने अपने शरीर की अस्थियां तक दान कर दीं। उन्हीं अस्थियों से वज्र का निर्माण

हुई कि नैमिषारण्य कलियुग के प्रभाव से परे है और यहां की आध्यात्मिक शक्ति आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। धर्मग्रंथों में नैमिषारण्य का उल्लेख अत्यंत सम्मान के साथ मिलता है। महाभारत, स्कंद पुराण, पद्म पुराण, वायु पुराण और अनेक अन्य ग्रंथों में इसका वर्णन एक पवित्र वन क्षेत्र के रूप में किया गया है। कहा जाता है कि यहां 88 हजार ऋषियों ने एक साथ वैदिक यज्ञ, तपस्या और धर्म चर्चा की थी। इसी स्थान पर सूत जी महाराज ने ऋषियों को पुराणों का ज्ञान सुनाया था। यह वही भूमि है जहां धर्म, ज्ञान और अध्यात्म की अनेक धाराएं एकत्र होकर मानव कल्याण का मार्ग प्रस्तुत करती रही हैं। नैमिषारण्य का संबंध केवल ब्रह्मजी से ही नहीं, बल्कि भगवान विष्णु, भगवान शिव, देवी सती और अनेक देवताओं से भी जोड़ा जा सकता है। धार्मिक मान्यताएं इस स्थान को विशेष देवी-देवताओं का निवास हैं। यही कारण है कि इस तीर्थ की परिक्रमा और दर्शन का विशेष महत्व माना गया है। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि यहां किए गए जप, तप, दान और पूजा का फल कई गुना बढ़कर प्राप्त होता है। अनेक संत और महात्मा इसे पृथ्वी पर देवताओं का निवास स्थल भी बताते हैं।

अहमदाबाद में आज ताज की जंग, गुजरात का संयम या बेंगलुरु का तूफान कौन बनेगा चैंपियन?

अहमदाबाद। दो महीने तक चले रोमांच, रिकॉर्डों की बारिश, आखिरी गेंद तक सांसें रोक देने वाले मुकाबलों और करोड़ों क्रिकेट प्रेमियों की धड़कनों को तेज करने वाले सफर के बाद इंडियन प्रीमियर लीग 2026 अपने सबसे बड़े मुकाम पर पहुंच गया है। रविवार की शाम दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट मैदान नरेंद्र मोदी स्टेडियम में जब गुजरात टाइटंस और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु आमने-सामने उतरेगी, तब सिर्फ एक ट्रॉफी का फैसला नहीं होगा, बल्कि यह भी तय होगा कि इस सीजन की सबसे बेहतरीन टीम कौन है। एक तरफ गत विजेता बेंगलुरु है, जो लगातार दूसरा खिताब जीतकर आईपीएल के महानतम चैंपियनों की सूची में अपना नाम और ऊपर दर्ज कराना चाहती है, तो दूसरी तरफ अपने घरेलू मैदान पर खेल रही गुजरात टाइटंस है, जो पांच वर्षों में तीसरी बार फाइनल में पहुंचकर अपनी बादशाहत साबित करने के इरादे से मैदान में उतरेगी।

सूरत में 19.79 लाख रुपये की शराब और बीयर नष्ट कर दी गई, पांच पुलिस थानों के परिसर में रोड रोलर का इस्तेमाल किया गया



(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत में, जून-3 के पांच पुलिस थानों में शराबबंदी के उल्लंघन के तहत जब्त की गई 19 लाख रुपये से अधिक की शराब और बीयर को नष्ट कर दिया गया। कतरगाम पुलिस स्टेशन, महिधरपुरा पुलिस स्टेशन, लालगेट पुलिस स्टेशन, चौक बाजार पुलिस स्टेशन और सिंगनपुर पुलिस स्टेशन द्वारा जब्त की गई शराब को 20 मई को सिंगनपुर में दामोली अक्षरवाड़ी फार्म के पास दामोली पुल के नीचे एक रोलर चलाकर नष्ट किया गया। जब्त की गई शराब में 291 छोटी और बड़ी शराब की बोतलें और 265 बीयर के टिन शामिल थे, जिनकी कुल कीमत 1979298 रुपये थी। यह गांधी जी के गुजरात में शराबबंदी का क्रियान्वयन है।

गुजरात के राहुल जाखड़ ने एशियन यू-20 डेकाथलॉन स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा

वापी के मैदान से एशिया के पोटियम तक की यात्रा, वलसाड के 18 वर्षीय खिलाड़ी ने हांगकांग में बनाया राष्ट्रीय रिकॉर्ड

“मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात ने खिलाड़ियों को प्रोत्साहन देने के लिए खेल-कूद का मजबूत ढाँचा तैयार किया है और विश्व स्तरीय सुविधाएँ विकसित की हैं। युवा खिलाड़ियों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए हर संभव सुविधा देने का हमारा संकल्प है। राहुल को प्राप्त उपलब्धि इन प्रयासों का ही परिणाम है।”

— उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संचवी

गांधीनगर : वापी के एक स्थानीय मैदान में खिलाड़ियों को प्रशिक्षण लेते हुए देखकर उत्सुकता से शुरू हुई यात्रा आज भारतीय एथलेटिक्स के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखी गई है। गुजरात के वलसाड जिले के चरवाड़ा गाँव के 18 वर्षीय राहुल जाखड़ ने हांगकांग (चीन) में आयोजित 22वीं एशियन यू-20 (अंडर-20) एथलेटिक्स चैंपियनशिप में डेकाथलॉन स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचा है। राहुल ने दस इवेंट की इस कठिन प्रतियोगिता में कुल 7,185 पॉइंट्स प्राप्त कर खिताब अपने नाम किया और साथ ही अंडर-20 श्रेणी में भारत का नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी स्थापित किया। यह उपलब्धि केवल राहुल के लिए ही

चुनावी रणभेरी से पहले भाजपा को मिला संगठन का संदेश, नितिन नवीन ने साधे अनुशासन और विस्तार के सुर

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में पहले से अधिक मजबूत जनादेश हासिल करना है, तो उसे उन क्षेत्रों और वर्गों तक पहुंच बनानी होगी जहां अभी भी संगठन की पकड़ अपेक्षाकृत कमजोर है। उन्होंने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन का तीन दिवसीय उत्तराखंड दौरा इसी रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है। इस दौरान में उन्होंने केवल औपचारिक बैठकों तक खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि संगठन की जमीनी स्थिति, जनप्रतिनिधियों की सक्रियता, बूथ स्तर की तैयारियों और आगामी चुनावी चुनौतियों पर विस्तार से मंथन किया। उनके संदेशों में एक ओर चुनावी जीत का रोडमैप दिखाई दिया, तो दूसरी ओर विधायकों और पदाधिकारियों के लिए अनुशासन, जवाबदेही और संगठनात्मक एकजुटता का स्पष्ट संकेत भी नजर आया। देहरादून में आयोजित बैठकों के दौरान नितिन नवीन ने सांसदों, विधायकों, जिला पदाधिकारियों और संगठन के विभिन्न स्तरों के नेताओं के साथ अलग-अलग संवाद किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को मिली 47 सीटों की सफलता को अंतिम उपलब्धि मानकर नहीं बैठा जा सकता। यदि पार्टी को देवभूमि में

यह मुकाबला सिर्फ दो टीमों का नहीं बल्कि दो अलग-अलग क्रिकेट दर्शन की टक्कर भी है। एक ओर बेंगलुरु की निडर और आक्रामक क्रिकेट है, जो शुरुआत से ही विपक्षी गेंदबाजों पर हमला बोलने में विश्वास रखती है, तो दूसरी ओर गुजरात का संतुलित और रणनीतिक खेल है, जो धैर्य, साझेदारियों और सही समय पर प्रहार करने की कला पर आधारित है। पूरे टूर्नामेंट में दोनों टीमों ने अपने-अपने अंदाज से सफलता हासिल की है और यही वजह है कि दोनों फाइनल तक का सफर तय करने में सफल रही हैं।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने इस सीजन में जिस तरह की क्रिकेट खेली है, उसने विरोधी टीमों को कई बार पूरी तरह बेवस कर दिया। पिच चाहे बल्लेबाजों की मददगार रही हो या गेंदबाजों की, बेंगलुरु ने हर परिस्थिति में आक्रामकता को अपना सबसे बड़ा हथियार बनाए रखा। यही कारण है कि इस सीजन में सबसे ज्यादा 200 से अधिक के स्कोर बनाने का रिकॉर्ड भी उसके नाम है। टीम



ने कई मुकाबलों में शुरुआत से ही विपक्षी गेंदबाजों पर हमला बोलकर मैच को एकतरफा बना दिया। पहले क्वालिफायर में गुजरात टाइटंस के खिलाफ मिली शानदार जीत ने उसके आत्मविश्वास को और ऊंचा कर दिया है। बेंगलुरु की सबसे बड़ी ताकत उसकी बल्लेबाजी है। विराट कोहली एक बार फिर बड़े मैचों के खिलाड़ी साबित हुए

गुजरात में शिक्षकों के कम वेतन का मुद्दा: श्रम कल्याण के दावों के बीच, शिक्षा क्षेत्र में शोषण के आरोप

किया है। सरकार ऐसा करती है और इसे सुशासन कहती है। एक प्राथमिक शिक्षक, जो वेतन आयोग के नियमों के अनुसार वेतन पाने का पात्र है, उसे 2500 रुपये का शिक्षक माना जाता है। लगभग एक दशक तक, विद्या सहायक कहलाने वाले शिक्षकों का वेतन 2500 रुपये पर स्थिर रहा। राज्य मंत्रियों और विधायकों के वेतन और भत्ते बढ़े, जो कभी-कभी लगभग 55000 रुपये तक पहुंच गए। लेकिन विद्या सहायकों के वेतन में वृद्धि नहीं हुई। फिर लगभग दस साल बाद, उनका (विद्या सहायकों का) वेतन 4500 रुपये हो गया और अब यह 5300 रुपये है। इस प्रकार, एक शिक्षक को प्रतिदिन 170 रुपये की मजदूरी मिलती है। एनआईसीए के तहत काम करने वाले दिहाड़ी

मजदूर को प्रतिदिन 147 रुपये की मजदूरी मिलती है। तो क्या दिहाड़ी मजदूर शिक्षकों को प्रतिदिन केवल 30 रुपये अधिक मिलते हैं? कई शिक्षण सहायक न केवल स्नातक या पीटीसी स्नातक हैं, बल्कि उन्होंने स्नातकोत्तर, एम.फिल और पीएचडी की डिग्री भी प्राप्त की है। यानी, अगर गुजरात सरकार 12वीं कक्षा के बाद तीन, पांच या सात-आठ साल तक पढ़ाई करने वाले व्यक्ति को पांच साल तक दिहाड़ी मजदूर के बराबर मजदूरी देती है, तो क्या इसे सुशासन कहा जा सकता है? अगर कोई प्लंबर नल लगाने या टीक करने के लिए घर आता है, तो वह आधे घंटे के काम के लिए 200 रुपये लेता है। इलेक्ट्रीशियन तो इससे भी ज्यादा लेता है। एक आम राजमिस्त्री भी छह घंटे

मौजूदगी बेंगलुरु को बेहद खतरनाक बनाती है। यह ऐसा बल्लेबाजी क्रम है जो किसी भी लक्ष्य का पीछा कर सकता है और किसी भी गेंदबाजी आक्रमण को ध्वस्त करने की क्षमता रखता है। गेंदबाजी में भी बेंगलुरु ने इस बार प्रभावित किया है। भुवनेश्वर कुमार 26 विकेट लेकर टीम के सबसे सफल गेंदबाज रहे हैं। नई गेंद से उनकी स्विंग विपक्षी बल्लेबाजों के लिए लगातार चुनौती बनी रही है। जोश हेजलवुड, रसिख सलाम और कृपाल पंड्या ने भी महत्वपूर्ण मौकों पर टीम को सफलताएं दिलाई हैं। हालांकि बेंगलुरु की चिंता यह है कि इस सीजन में उसे मिली पांच हारों में से चार हार घर से बाहर आई हैं। ऐसे में अहमदाबाद की परिस्थितियों में दबाव को संभालना टीम के लिए महत्वपूर्ण होगा।

दूसरी ओर गुजरात टाइटंस का पूरा अभियान उसके शीर्ष क्रम के इर्द-गिर्द घूमता रहा है। कप्तान शुभमन गिल और साई सुदर्शन की जोड़ी ने इस सीजन में

बल्लेबाजी की नई मिसाल कायम की है। दोनों ने मिलकर विपक्षी गेंदबाजों को लगातार परेशान किया है और आईपीएल इतिहास की सबसे सफल सलामी जोड़ियों में अपनी जगह मजबूत की है। गिल के नाम 722 रन हैं जबकि साई सुदर्शन 710 रन बनाकर उनके बेहद करीब हैं। दोनों बल्लेबाजों की साझेदारी ही गुजरात को सफलता का सबसे बड़ा आधार रही है। आंकड़े बताते हैं कि जब भी गिल और सुदर्शन पांचवें ओवर के बाद तक क्रीज गिल के नाम 722 रन हैं जबकि साई मुकाबले अपने नाम किए हैं। इससे साफ है कि गुजरात की बल्लेबाजी का भविष्य काफी हद तक इन दोनों खिलाड़ियों पर निर्भर करता है। जोस बटलर ने भी 507 रन बनाकर टीम को महत्वपूर्ण योगदान दिया है, लेकिन मध्यक्रम में वॉशिंगटन सुंदर को छोड़कर कोई बल्लेबाज लगातार प्रभाव छोड़ने में सफल नहीं रहा। यही गुजरात की सबसे बड़ी कमजोरी भी मानी जा रही है।

विदेशी पूंजी की लगातार वापसी से बाजार पर दबाव तीन महीने में निवेशकों ने निकाले लाखों करोड़ रुपये

मुंबई। भारतीय शेयर बाजार एक बार फिर विदेशी निवेशकों की लगातार बिकवाली के दबाव से जूझ रहा है। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक तनाव, डॉलर की मजबूती और रुपये की कमजोरी के बीच विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) भारतीय बाजारों से लगातार धन निकाल रहे हैं। मई 2026 में भी यह सिलसिला थमता नहीं दिखा और विदेशी निवेशकों ने भारतीय इक्विटी बाजार से 32,963 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी कर दी। इसके साथ ही विदेशी निवेशक लगातार तीसरे महीने बिकवाल बने रहे, जिससे बाजार की धारणा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। नेशनल सिक्क्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) के ताजा आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2026 की शुरुआत से लेकर अब तक विदेशी निवेशक भारतीय शेयर बाजार से 2.24 लाख करोड़ रुपये से अधिक की पूंजी निकाल चुके हैं। यह आंकड़ा इस बात का संकेत है कि वैश्विक निवेशक फिलहाल उभरते बाजारों के प्रति

सतर्क रख अपना रहे हैं और जोखिम कम करने की रणनीति के तहत निवेश घटा रहे हैं। लगातार हो रही निकासी ने भारतीय बाजार में उतार-चढ़ाव को बढ़ाया है और निवेशकों के बीच भविष्य को लेकर नई चिंताएं पैदा कर दी हैं। विदेशी निवेशकों की बिकवाली का असर देश के प्रमुख शेयर सूचकांकों पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। कुछ समय पहले तक रिकॉर्ड ऊंचाइयों पर पहुंचा भारतीय बाजार अब दबाव में नजर आ रहा है। सेंसेक्स अपने उच्चतम स्तर 86,100 अंकों के करीब से फिसलकर 74,775 तक आ गया है, जबकि निफ्टी भी 26,373 के रिकॉर्ड स्तर से नीचे आकर लगभग 25,500 के आसपास कारोबार कर रहा है। हालांकि बाजार में गिरावट केवल विदेशी निवेशकों की बिकवाली का परिणाम नहीं है, लेकिन उनकी लगातार निकासी ने निवेशकों की धारणा को कमजोर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेषज्ञों का मानना ​​है कि मौजूदा वैश्विक परिस्थितियां विदेशी निवेशकों को अधिक

सतर्क बना रही हैं। पश्चिम एशिया में जारी तनाव और उससे उत्पन्न भू-राजनीतिक जोखिमों ने अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजारों में अस्थिरता बढ़ा दी है। इसके अलावा अमेरिका की व्यापक नीतियों को लेकर बनी अनिश्चितता, वैश्विक आर्थिक विकास की धीमी गति और प्रमुख जर्गन्यक्वयआओ में ब्याज दरों को लेकर जारी चर्चाओं ने भी निवेशकों को जोखिमपूर्ण परिसंपत्तियों से दूरी बनाने के लिए प्रेरित किया है। भारतीय बाजार पर दबाव बढ़ाने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण कारण रुपये की कमजोरी भी है। जब डॉलर के मुकाबले रुपया कमजोर होता है, तो विदेशी निवेशकों के वास्तविक रिटर्न पर असर पड़ता है। ऐसे में कई निवेशक अपने निवेश को सुरक्षित रखने के लिए भारतीय बाजार से धन निकालकर अपेक्षाकृत सुरक्षित परिसंपत्तियों या विकसित बाजारों की ओर रुख करते हैं। यही कारण है कि हाल के महीनों में रुपये में आई कमजोरी ने एफपीआई निवेश को प्रभावित किया है।



वैज्ञानिक प्रशिक्षण, विशेषज्ञ मार्गदर्शन तथा गुजरात में विकसित हो रहे खेल-कूद के मजबूत ढाँचे का परिणाम है। हांगकांग से फोन पर बात करते हुए राहुल ने कहा, “मेरी समय यात्रा में मुझे मार्गदर्शन तथा सहयोग देने वाले मेरे सभी कोच का मैं आभारी हूँ। गुजरात सरकार

ने खिलाड़ियों को उत्तम सुविधाएँ एवं अवसर प्रदान किए हैं।” अब मेरा सपना कॉमनवेल्थ गेम्स तथा ओलिंपिक्स में भारत का प्रतिनिधित्व करने का है और इसके लिए मैं लगातार मेहनत करता रहूँगा।”

राहुल की उपलब्धि का महत्व समझाते

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा जिला प्रशासनों को राज्य ‘स्वागत’ अंतर्गत आने वाली शिकायतों का समुद्र करने के स्पष्ट दिशा-निर्देश न्यायिक एवं सरलतापूर्वक निवारण लाकर जनता का सरकार के प्रति विश्वास अधिक सुदृढ़ करने के स्पष्ट दिशा-निर्देश

» मुख्यमंत्री ने मई-2026 के राज्य स्तरीय ‘स्वागत’ ऑनलाइन शिकायत निवारण कार्यक्रम में प्रसुत्तियाँ-शिकायतें लेकर आए किसानों तथा आम आदमी की प्रस्तुतियाँ संवेदनापूर्वक सुनकर त्वरित निवारण के निर्देश दिए

» राज्य, जिला तथा तहसील ‘स्वागत’ में समग्रतः 4020 आवेदकों की प्रस्तुतियाँ सम्बद्ध विभागों को आवश्यक कार्यवाही के लिए भेजी गईं

» मुख्यमंत्री का पुलिस प्रशासन को सार्वजनिक मार्गों पर अतिक्रमण करने वाले असामाजिक तत्वों के विरुद्ध कड़ाई से पेश आकर किसानों को सुरक्षा की अनुभूति कराने का निर्देश

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने जिला प्रशासनों को राज्य ‘स्वागत’ अंतर्गत आने वाली प्रस्तुतियों-शिकायतों का समयसीमा में न्यायिक एवं सरलतापूर्वक निवारण लाकर जनता का सरकार के प्रति विश्वास अधिक सुदृढ़ हो; इस तरह कार्य करने के दिशा-निर्देश दिए हैं। इस संदर्भ में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि यदि किसी भी प्रस्तोता का कार्य नियमानुसार होने योग्य हो, तो तत्काल उसे पूरा करके देना चाहिए। इतना ही नहीं; यदि नियमानुसार कार्य न हो सके; तो तो सम्बद्ध व्यक्ति को उसका समाधान खोजना ही संगठन की मजबूती का आधार बनता है। नितिन नवीन ने नेताओं को यह भी संकेत दिया कि वर्तमान समीक्षा अंतिम नहीं है।

राज्य स्तरीय ‘स्वागत’ ऑनलाइन जन शिकायत निवारण कार्यक्रम में प्रत्यक्ष प्रस्तुतियाँ लेकर आए सभी आम लोगों की प्रस्तुतियाँ संवेदनापूर्वक सुनीं। सामान्यतः हर महीने के चौथे गुरुवार को आयोजित होने वाला यह राज्य ‘स्वागत’ कार्यक्रम इस बार मई के चौथे गुरुवार को सार्वजनिक अवकाश होने के कारण शनिवार को आयोजित हुआ। इस राज्य ‘स्वागत’ में 215 से अधिक आवेदक अपनी प्रस्तुतियों के साथ नहीं; यदि नियमानुसार कार्य न हो सके; तो तो सम्बद्ध व्यक्ति को उसका समाधान खोजना ही संगठन की मजबूती का आधार बनता है। नितिन नवीन ने नेताओं को यह भी संकेत दिया कि वर्तमान समीक्षा अंतिम नहीं है।



कड़ाई से काम लेकर किसानों को सुरक्षा की अनुभूति कराने का निर्देश दिया। बेटाद जिले के एक आवेदक की कृषि भूमि में भू-स्वामी के जीवनकाल में ही उसराधिकार के अधिकार दर्ज करने और उत्तराधिकार निर्मूल की प्रविष्टि प्रमाणित करने के मामले में पूर्व में हुई अतिक्रमण को लेकर शिकायत की निर्देश देकर सार्वजनिक मार्गों पर ऐसे अतिक्रमण न हों और किसान अपने कृषि संसाधन एवं उत्पाद आसानी से ले जा सके, इसके लिए मार्ग अतिक्रमणमुक्त रहे; यह सुनिश्चित करने पर जोर दिया। उन्होंने पुलिस प्रशासन को भी सार्वजनिक मार्गों पर अतिक्रमण करने वाले असामाजिक तत्वों के विरुद्ध

लेकर मुख्यमंत्री ने जिला कलेक्टर को तत्काल कार्यवाही करने और रिसर्व नंबर में गलती से दर्ज प्रविष्टि के सुधार के लिए भी आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दिया। उन्होंने बताया कि भूमि रिकॉर्ड जनरेट करने का आदेश पहले ही जारी कर दिया गया है। उन्होंने ऐसी छोटी समस्याओं का निवारण स्थानीय स्तर से ही तेजी से लाने का जिला अधिकारियों को निर्देश दिए। वडोदरा जिले के एक आवेदक ने ग्राम-स्थल की संपत्ति की सत्यापित प्रति त्रामा मापन को लेकर प्रस्तुति की, जिस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि सरकार के कार्यालय में रिकॉर्ड उपलब्ध न हो, अनुपलब्ध हो जाने की शिकायत को

हो, तो उसकी उचित जाँच कर उसे मान्य मानते हुए नियमानुसार कार्यवाही होनी चाहिए। इस संबंध में उन्होंने जिला कलेक्टर को जरूरी निर्देश दिए। अरवल्ली जिले के एक गाँव का नगर पालिका में विलय होने के बाद विकास योजना मंजूर न होने के कारण अवकासी निर्माण का आज़ा पत्र देने में विलंब होने की प्रस्तुति पर मुख्यमंत्री ने नगर पालिका को आवश्यक कार्यवाही के बाद निर्माण कार्य आज़ा पत्र देने की प्रक्रिया तत्काल शुरू करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य ‘स्वागत’ में आई सभी प्रस्तुतियों में जनहितकारी संवेदना दिखाते हुए त्वरित निवारण संबंधी दृष्टिकोण दर्शाकर प्रो-पीपल गवर्नेंस की अनुभूति कराई। इस राज्य ‘स्वागत’ कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार, उप-प्रधान सचिव डॉ. विनोद पांडे, डॉ. अचय कुमार तथा विशेष कार्याधिकारी श्री धीरज पारेख व श्री राकेश व्यास और सम्बद्ध विभागों के वरिष्ठ सचिव उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री के समक्ष आई प्रस्तुतियों के संदर्भ में सम्बद्ध जिला कलेक्टर तथा प्रशासनकर्ता वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जुड़े और उन्होंने पूरक विवरण तथा जानकारी प्रदान की।

